AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (E):2583:1348, ISSN(P): 2582:8800 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 01| January 2022| ***www.agpegondwanajournal.co.in*** | Page No. 25-28

प्राचिन गोंड समाजके रिती-रिवाज और सामाजिक प्रभाव का अध्ययन

Dr. Surekha Kale
Assistant Professor
Department of Social Science
Dadasaheb Despande Art, Science and commerce college, Wardha, M.S

सारांश:

चांदागढ़ यह गोंडवाना के दक्षिण भूभाग की राजधानी थी जिसकी सीमा वरंगल, कागजनगर, अदिलाबाद, कळंब, माहूरगढ़, पौनी, भंडारा तक थी । दक्षिण गोंडवाना में इ.स 870 से स्थापित गोंडवाना सत्ता एक ही आत्राम राजघराने में चलती आ रही है। और उनके वंशज वर्तमान में अपनी महत्ता को बनाए रखे हैं। संपूर्ण भारत देश में चंद्रपुर के गोंड राजा गोंडी धर्माधिकारी पद और राजा पद से विभूषित है। उनके राजपाट और धर्म सत्ता के अधिकार को मान्यता शासन द्वारा प्राप्त हुई है। गोंडराजाओं का दरबार न्याय प्रविष्ट वर्तमान सुप्रीम कोर्ट जैसा था। गोंडवाना का महान साम्राज्य 4 इकाई में 4 राजाओं द्वारा संचालित होता था। गढ़ा मंडला से चांदा गढ़ और देवगढ़ से छत्तीसगढ़ तक मध्य भारत (वर्तमान में) फैला था।

मानव वंश इतिहास को अगर देखा जाए तो, मूल अवस्था में मानव अन्य प्राणियों जैसा जीवन-यापन करता था। धीरे-धीरे स्टोन एज, कॉपर एज, ऐसी प्रगतिशील अवस्था को पार करते हुए लाखों साल के बाद आज वह आधुनिक अवस्था में आ पहुंचा है। गोंडवाना साम्राज्य स्थापना के पूर्व भी आदिमानवों की शक्ल में गोंड (कोया) इस धरती पर थे। जैसे जैसे सामाजिक जीवन के आवश्यकताओं के अनुसार आजीवन बसता गया यही गुट समूह आगे गण के रूप में प्रख्यात हुए । इन्हीं का सुधारित रूप गोंड गणों के देशों में होने लगा। गोंड गण ऑस्टे*लॉइड वंश के है, जो गोंडवाना

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Surekha Kale Assistant Professor Department of Social Science Dadasaheb Despande Art, Science and commerce college, Wardha, M.S Email: surekhakale11@gmail.com	

भूभाग पर विस्तारित हुए। लॉरेशिया और गोंडवाना इन सिर्फ दो खंडों में मानव विभाजित हुआ, यह इतिहास का सत्य है। गोंड गणों ने अपने ट्राइब का नेतृत्व अपने हाथ में लेकर समाज रचना की शुरुआत की। हम किसी भी किस्से कहानियों मैं ना जाते हुए व्यापक तौर पर यह सोचेंगे कि, समाज निर्मित दौरान गणों के समूह निसर्ग को देवता मानकर देवता स्वरूप देते गए। जब गोंडवाना समूह अपनी धार्मिक मान्यता को स्थिर करने के लिए सामाजिक नीति व्यवस्था और धर्म नीति को आधार बनाते गए।

प्रस्तावना:

गोंडी धर्म के कितने गुरु थे इस पर बहस ना करते हुए गुरु कुपार लिंगो इस मान्य तपस्वी व्यक्ति द्वारा गोंड गणों में निसर्ग के वस्तुओं की सेवा करने का चलन सीखाते रहे। जिसके द्वारा पशु जीवन व्यवस्था छोड़कर कुटुंब व्यवस्था को बनाए रखकर नैतिकता को प्रबलता मिलते गई। हम देखते हैं कि 4, 5, 6 गण और 7 गण समूह का निर्माण होने पर विवाह संरचना कैसी हो यह गोंड गणों के पवित्र पुरुषों और स्त्रियों द्वारा ठहराया गया। इससे में + और - , (सम और विषम) संख्या गणों में शादी के रस्मो की नीव डाली गई। एक ही गणों में शादी ना हो, 4 गणों में जितने गोत्र है वह सब भाई बहन है। उदाहरण के तौर पर हम देखेंगे, 6 गणों के समूह में आने वाले सभी गौत्र जैसे आत्राम, चांदेकर, सिरपुरकर, कुंभेकार, उईके, कुमरे, इत्यादि भाई है। इनमें शादी ब्याह की व्यवस्था आपस में नहीं होती। आत्राम की बेटी उईके नहीं कर सकता इस प्रकार एक सुचारू व्यवस्था सामाजिक नैतिक बंधनों से युक्त बनाई गई जो वर्तमान में भी चल रही है। हमारे गोंड गणों की शाखाओं और उपशाखाओं में इसका कड़ाई से पालन होता है।

संशोधनके उद्देश:

1. प्राचिन गोंड समाजके रिती-रिवाज और सामाजिक प्रभाव का अध्ययन।
2. गोंड समाजके व्यवस्था का अध्ययन।

विश्लेषन:

यहां मौखिक पारंपरिक प्रक्रिया को वर्तमान के आधुनिक युग में लिखित रूप देकर हम अपने गणों के मान्यताओं के आधार को मजबूत बनाते हैं. वैचारिक , वाद विवाद , पाखंड आदि बातों से दूर रहकर गोंड गणों के सामाजिक ढांचे को बरकरार रखना हम सभी का कर्तव्य है.

गोंड गणों में स्त्रियों का महत्व:

द्रविड़ संस्कृति और आर्य संस्कृति इन दोनों के सामाजिक जीवन शैली और विचारधारा मैं बहुत अंतर है। द्रविड़ संस्कृति मातृसत्ता पद्धति को मानती हैं और आर्य संस्कृति पुरुष प्रधानता पद्धति को मानती हैं। हम द्रविड़ संस्कृति को नजदीक करते हैं गोंड और उसकी सभी शाखाएं मातृ प्रधान पद्धति पर जोर देती है। इसके सामाजिक जीवन में स्त्रियों को पुरुषों से अधिक अधिकार है। मातृ सत्ता यह कुटुंबा संस्था की प्रमुख है, शहरों की संस्कृति पर विचार करने के अलावा हम ग्रामीण और वन्य जीवन यापन करने वाले मानवी प्रवाह को देखे तो गोंड समुदाय मे ज्यादातर कुटुंब प्रमुख स्त्रियों को ही मानते हैं। गोंड गणों में माँ को अति महत्व दिया जाता है। इसका अर्थ यह है कि, गोंड गणों में स्त्रियों को पुरुषों समान बराबर का दर्जा दिया गया है और यह सत्य है की वर्तमान में हम आर्यों के संस्कृति के साथ-साथ चलने से कुछ गोंड गण पुरुष प्रधानता के आकर्षण से आकृष्ट होते जा रहे हैं और अपनी मातृ प्रधान संस्कृति को भूलते जा रहे हैं.

गोंड गणों के गण: गोंड गण समूह 4 'सग्गा' में बांटे गए हैं जैसे 4 चार देव, 5 देव, 6 देव और 7 देव - इन चार सगा के गण समूह का एक समाज है वह गोंड (कोया) कहलाता है। इनके मातृभूमि का नाम गोंडवाना, समाज गोंड, भाषा गोंडी और कर्म से धर्म भी गोंडी ! यह चिरकाल सर्वकालिक सत्य हैं इसे नकारा नहीं जा सकता।चातुरवर्ण व्यवस्था का गोंड गण कभी भी अंग नहीं रहे। दूर-दूर तक इसका ना कोई रक्त संबंध है ना ही सामाजिक व्यवस्था संबंध है। गोंडी धर्म यह स्वतंत्र व्यवस्था है और अपने आप में स्वयंभू है। स्वतंत्र अस्तित्व वर्तमान न्याय व्यवस्था ने भी स्वीकार कर मान्य किया है कि, यह गोंड गण समूह चातुरवर्ण व्यवस्था का भाग नहीं है। सूर्य का अस्तित्व सत्य पर आधारित है, गोंड गन समूह का अस्तित्व सत्य स्वतंत्रता मे अबाधित है। जब यह सत्य गोंड राजाओं को मालूम हुआ उन्होंने इस पर रक्षात्मक कार्रवाई शुरू कर के धर्म का पालन कैसा किया जाए और बाहरी आक्रमण कैसे रोका जाए इसलिए साल में एक बार राजा और जमींदार मिलकर सोचने लगे। किस्से कहानी गीतों से हटकर वास्तविकता जो सत्य पर आधारित है ऐसी व्यवस्था लागू करने के लिए आधुनिक वर्तमान काल में संस्थाएं स्थापित की जाने लगी। परंतु बाद में यहां निर्देशित होने लगा के धर्म और समाज व्यवस्था में खींचातानी शुरू हुई है और राजनयिक गट का निर्माण होकर प्राचिन गोंडी धर्म की महानता दांव पर लग रही है। आर्यों जैसे गोंड गणों में धर्म का उपयोग उनके अलग-अलग राजनैतिक नेता अपने स्वार्थ के लिए करके धर्म को खंडित करते जा रहे हैं , जैसे मन में आए चले दिए। गोंडी धर्म की मान्यता प्राचीन है, जो हमारे पूर्वजों ने और गोंड राजाओं ने संभाल कर रखी थी।

निष्कर्ष:

गोंड गणों की प्राचीन व्यवस्था जो पहांदीपारी कुपार लिंगो ने बनाई है उसी पर अपने गोंड गण समूह की सामाजिक व्यवस्था, संरचना, धर्मकार्य, देवी-देवताऐं, धर्मसिद्धांत प्रकृति पर आधारित है। उसको लिखित मान्यता देकर उसका संकलन किया है जिसमें गैरजिम्मेदारी का कोई अंग ना रहे, पाखंड, अंधश्रद्धा, दंतकथा, समाज विरोधी बात है ऐसी बातों का अंतर्भाव इन सभी किताबों में ना हो इसकी व्यवस्था रखकर संशोधन एवं परीक्षण करके ही इसे स्वीकृत किया गया है। पहांदीपारी कुपार लिंगो ने सिखाएं विचार, विश्वास तथा धर्म सिद्धांत-तत्वज्ञान श्रद्धा के साथ गोंड गण समाज के लिए निर्धारित किए गए हैं।

हमारे गोंड गण समूह का विश्वास है कि हमारी समाज व्यवस्था ही हमारे परिवार और गणों का उद्धार कर सकती है। हमारे गुरु कुपार लिंगो द्वारा दी गई परंपरा है जो प्राचीन समय से चली आ रही है उसका पालन करने से हमारा दैनंदिन जीवन सुखमय हो सकता है। पहांदीपारी कुपार लिंगो ने जो शिक्षा गोंड गणों को दी है वह सबसे सुंदर है गोंड गण समूह और उनके उपशाखाओं ने 47गुरू कुपार लिंगो की शिक्षा और नियम पालन करने से हमारे जीवन में स्थिरता, शांति एवं समाज मे एकता रहेगी हमें सदा प्रकृति पर प्रेम करना चाहिए।

संदर्भ:

१) डॉ. आगलावे प्रदीप: "आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१२) पृ. क्र. १६, १७.

२) "वार्षिक रिपोर्ट: आदिवासी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, २०१३-१४

३) डॉ. मारोती तेगमपुरे : "आदिवासी विकास आणी वास्तव" चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, (२००९)

४) डॉ. आगलावे प्रदीप : "आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१२) पृ. क्र. ३५१,

५) डॉ. आगलावे प्रदीप उपरोक्त (२०१२) पृ. क्र. ३५३, ३५४. २४) डॉ. देवगावकर एस. जी. "महाराष्ट्रातील निवडक जाती-जमाती" श्री साईनाथ, प्रकाशन, नागपूर, (२०१३)

६) डॉ. आगलावे प्रदीप : "आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर (२०१२)

■ ■ ■